શ્રી ગુ

મષ્ટાક્ષર.

તથા

શ્રી ગુસાંઇજી

આશ્રયના પદ.

ના મ ટે અત્યત ઉપીયોગી પુસ્તક

ની પ્રગટ કરનાર

છબીલદાસ બાળમુકુંદદાસ.

મુંબાઈ મધે આર્ય મંડલ પ્રેસમાં
માણેકશા દાદાભાઈ એ છાપ્યું છે.

સંવત ૧૯૨૯—સન ૧૮૭૩

કિંમત ૬ આના

गूजरात विद्यापीठ ग्रंथालय
(गुजरात कोपीराईट विभाग)

अनुक्रमांक किंमत

ग्रंथनाम

वर्गांक

श्री गोपीजनवल्लभायनमः

अथ अष्टाक्षरनी टीका लखीछे.

श्रीवल्लभ करसुं हेत नहीं, नाहिं वैष्णवसों स्नेह;
ताको जन्म वृथा गये, जेउं कार्तिकके मेह.

हवे श्रीगुसांईजी कहेछे के ज्यारे श्री आचार्यजी श्री महाप्रभुजी आप भूतलने विषे दैवी जीवना उद्धारार्थ प्रगट थया त्यारे श्री आचार्यजी महाप्रभुजीए प्रगट थइ विचार्युं के दैवी जीवतो श्री भगवानथी अलगा रही भूतलने विषे प्रगट थया छे, तेथी अनेक तेमने जन्म लेवो पडे छे माटे अनेक जन्मने लीधे आ सृष्टिमां भटकता फरेछे पण कांई स्वारथ थतो नथी;

अने मायावादी आसुरी जीवनो संग करीने दैवी जीव पोतीको स्वरूप भूली गयाछे. तेने करीने श्रीभगवानथी विमुख थई रह्या छे, तेथी तेमने कंई श्रीभगवाननी प्राप्ती थती नथी. श्रीकृष्ण रस वगर थया छे. एथी दैवी जीवने जोईने श्रीआचार्यजी आप परम दयाळ छे वास्ते दैवी जीवनो उद्धार थाय तेनो विचार आपने थयो.

के ज्यारे श्री ठाकुरजीने शरण दैवी जीव आवे त्यारेज कृतार्थ थाय, अने साधनथी तो जीवनो कदी पण कृतार्थ थाय नहीं. तेथी श्रीआचार्यजी महा प्रभुजीए जीवना उपर कृपा करी शरण लईने अष्टाक्षर मंत्र तेसमय प्रगट करी दैवी जीवने दान दीधुं. केमके आपे अष्टाक्षर

मंत्रमांनीज देवीजीवना उपर घणीज कृपा कीधी छे शाथी जे आ मंत्रनुं दान आपतां जीवने सात भक्तिनुं दान आप्युं छे. तो के सात भक्ति कई कई छे. प्रथम तो श्रवण भक्ति. बीजी कीर्तनभक्ति. त्रीजी स्मरणभक्ति. चोथी पादसेवनभक्ति. पांचमी आचरणभक्ति. छठी अभिवंदनभक्ति. सातमी दासभक्ति. तेथी दास पर्यंत सातमी भक्तिनुं दान श्री आचार्यजी महा प्रभुजीए शरण मंत्र दई सिद्ध कीधुं छे. वास्ते आ सातें भक्ति तो ब्रह्मादिकथी अथवा कोईथी सिद्ध थई नथी; तो आ जीवथी क्यांथी सिद्ध थाय. केमजे राजा परीक्षितने एक श्रवण भक्ति थईछे. अने कीर्तन भक्ति श्री शुकदेवजीने थई छे तथा सुमिरणभक्ति श्री

शेषजीने थईछे. प्रल्हादजीने स्मरणभक्ति थईछे. लक्ष्मीजीने पादसेवनभक्ति थईछे. अश्वत्थपूजन भक्ति राजा पृथुने थईछे. अभिवंदनभक्ति अक्रुरजीने थईछे; अने दास भक्ति हनुमान्‌जीने थईछे. जो के तेतो एवा सामर्थ्यवान हता तोपण महा कष्टथी एक एक भक्ति थईछे. तेथी सातें भक्ति तो कोईने पण सिद्ध थई नथी. वास्ते आ काळिकाळमां जीवनमां एटली सामर्थ कहांछे, जे आटली भक्तिना साधनमां ते एकपण साधन करी शके. परंतु श्री आचार्यजी महा प्रभुतो साक्षात् पूर्णपुरुषोत्तमछे. श्रीकृष्णचंद्र श्रीगोवर्धन धरीने मुखारविंदरूप आपछे. कर्तुं अकर्तुं अन्यथा कर्तुं सर्व सामर्थ्यवान छे तेथी देवी जी

वनाउपर अनुग्रह करी. दैवी जीवे श्री आचार्यजी महा प्रभुजीनी पासे आवी शरण मंत्र लीधुं. ते समये सात भक्तिनी सिद्धि थई तेमां कई संदेह नहीं. केमके श्रीआचार्यजी महा प्रभु तो साक्षात् पूर्णब्रह्म छे. तेथी पूर्ण पुरुषोत्तमनुं आपेलुं जे पदार्थ होय ते तत्काळ फलित सिद्ध थाय. तेमां कई संदेह नहीं, तेथी श्री आचार्यजी महा प्रभुजीनो प्रताप एवो छे. परंतु जीवनी बुद्धि स्थिर रहेती नथी. तेथी मनमां एवुं विचारे के ज़ो आ रीत थी आ मंत्रथी फळ सिद्ध थशेके नहींथशे. ए संदेह दैवा जीवना मनमां रह्यो. तेथी ए संदेहने लीधे; श्रीआचार्यजी महा प्रभुजीओ अष्टाक्षरमंत्र कह्योछे तेनो भाव श्रीगुसांईजी

कहेछे. कृष्ण कृष्ण कृष्णेति. एवुं कहीने ए जणाव्युं के अहर्निस श्रीकृष्ण एवुं जे नाम मुखमां कहेतां रहेवुं एक पण क्षणमात्र कृष्णनाम विना रहेवुं नहीं. शाथी के ए नामछे तेथी त्रिविध ताप तत्काळ दूर थई जायछे अने सत्व रज तम तानी निवृत्ति आवेछे. तेथी पुनःपुनः वारंवार श्रीकृष्ण शरणंमम: एवुं कहेता रहेवुं. अने जेवारे क्षणमां कृष्ण नामनो उच्चार न करे ते पळे आसुर भाव प्राप्ति थायछे, अने ज्यारे आसुर भाव प्राप्ति थयो ते समे भगवत सेवामांथी भगवत दर्शनमांथी भगवत आश्रयमांथी मन छुटी जाय अने ज्यारे भगवत सेवामांथी मन छुठयो त्यारे भगवत सेवामांथी विमुख थयो अने ज्यारे भगवत

सेवा भगवत दर्शनमांथी मन छुट्यो त्यारे श्रीठाकुरजीमांथी पण विमुख थयो तेवारे भगवत भजन कीर्तनमांथी पण मन छुटी जाय अने पछी भगवत आश्रय पण छुटी जायछे अने भगवत आश्रय छुट्यो त्यारे तो अलौकिक सघळो पदार्थ कंई रह्यो नहीं, तथा अलौकिक पदार्थ सघलो छुट्यो त्यारे तो आ केवल लौकिक थई जाय; अने ज्यारे लौकिकता प्रगट थई त्यारे तो चित्तमां आसुरी आवेश उद्वेग थई आवे.

अने चित्तमां ज्यारे उद्वेगता थई त्यारे तो अनेक प्रतिबंध उपजे जेवारे प्रतिबंध थयो त्यारे तो तेने काम क्रोध लोभ मोह मद मत्सरता इत्यादि सर्व दोष तेना तद्दद यमां प्रवेश थाय. अने ज्यारे काम क्रोध

लोभ मोह मद मत्सरता प्रगट थई त्यारे तो तेनो देहपण परवश थयो; अने इंद्री पण परवस थई. त्यारे जीव मन सघळुं परवस थयुं. ज्यारे परवश जीव इंद्रीदेह थई त्यारे रोम रोममां लौकिक विषय प्रगट थई जाय तेने वास्ते अष्ट प्रहर चित्तनी वृत्ति विषयमां लागी रहे. तेथी करीने भगवत् स्वरूपनो आवेश तो हृदयमां आवे नहीं. वास्ते कहेछेके विषयाक्रांति देहानाम नावेश सर्वथा हरे. इतिवचनात् तो के विषयना आवेशथी सारी सारी वस्तु खावानुं मन थाय अथवा सारा सारा वस्त्र पेहेरवानुं मन थाय. पछी अन्नप्रसादी सामग्री होयते पोतीका स्वादने अर्थे तथा इंद्रियोंने पुष्टि करवाने अर्थे पोते खाय; तथा सुंदर

वस्त्र उत्तम श्रीठाकुरजी लायक होय तो पो
तीकी शोभानेअर्थे पोते पेहेरे. तथा अफीम
इत्यादिनुं पान करे तेथी अधउन्मत्तता थई-
ने विषयमां तत्पर थाय. तेथी करीने उंच
नीचनो कंई विचार करे नहीं. अने
विषय रसमां मग्न थईने सघळा धर्मने त्याग
करे. अने जो कोई ते लत छोडावा
देवाने शिक्षा बोध आपे तो तेना उपर
क्रोध करे. कोईनुं कह्युं माने नहीं. अने
बद्धानी निंदा करे. ए रीते काम क्रोध
करीने अष्ट प्रहर तेनुंज लक्षन राखे. तेथी
करीने सघळी वस्तुनी हानी होयछे. इत्या-
दिक अनेक दोष उपजे त्यारे एवो वि-
चार करीने श्रीकृष्ण नामनुं स्मरण कवु
पण मुखथी छोडवुं नहीं. अने काम क्रोध

लोभ मोह मद मत्सरता दोषने दूर करवा नो एक श्रीकृष्णनाम उपाय छे तेथी श्री गुसांईजीए कह्युंछे जे कृष्ण कृष्ण कृष्णेति त्रणवार फरी फरी कह्युंछे. तेथी वारंवार एज नामनो उच्चार करवो. फरी श्रीगुसांईजी आपे कह्युंछे के श्रीकृष्ण नाम सदा जपतां तेनो भावार्थ एछे के सदासर्वदा सर्वकाळविषे सुतां, बेसतां, जागतां, काम करतां उठतां बेसतां मारगमां चालतां बोलतां रात दिन घडी घडी पल पल क्षण क्षणनेविषे पवित्रतामां अपवित्रतामां सदा सर्वदा श्रीकृष्ण नामनो उच्चार करवो भुलवुं नहीं, सदा सर्वदा श्रीकृष्ण नामनुं स्मरण करवुं. अने श्री गुसांईजीए कह्युंछेके कृष्णनाम सदा जपवुं, केमके जप नाम गोप्यनुंछे. तेथी नाम एवी

रीते जपीए जेमां होठ फरके नहीं अने बीजा बधा सांभळे नहीं एवी रीते जपवुं. शाथी जे आ कृष्णनाम केवुंछे ? गूढ रसमय पदार्थ छे. ए जाणवुं केमजे चार वेदनो परम रहस्य पदार्थ छे अने अष्टादश पुराण श्रीभागवतनो सार परम रहस्य पदार्थ छे. बीजूं श्री स्वामिनीजीनो परम रहस्य गूठ भावात्मक स्वरूपात्मक परम रहस्य पदार्थ छे. श्रीमन व्रज भक्तनो परम रहस्य पदार्थ छे. अने श्री आचार्यजी महा प्रभुजीनो परम रहस्य पदार्थ छे तेथी सबळा ग्रंथनो सार परम रहस्य, एवो पदार्थ महा अलौकिक अष्टाक्षर मंत्र छे. तेथी श्री गुसांईजीए कहेलुंछे जे सदा जप वुं तेथी सदा सर्वदा परम तत्व जाणीने सर्व

काळ विषे आ श्रीकृष्ण नामनो जप करवो. तेमां एनो नेम नथी जे आटलोज जप करवो. अथवा आटला दिवस सुधी करवो अथवा आटला महिना सुधी करवो के आटला वरस सुधी करवो अथवा दिवसमां जप करवो तथा शत सहस्र तथा लक्ष कोटी निवधि पर्यंत क्षणथी पर्यंत आ जीवनो कंई नेम नथी तेथी ज्यारथी थयुं त्यारथी नित्य अहर्निस श्रद्धापूर्व जप करता रहेवुं. अने ज्यांसुधी श्वास आवे तहांसुधी पोतीको परम निजव्रत पतिव्रता दासधर्मनो सार रसरूप जाणी आ मंत्रनो जप करवो; जे क्षणने विषे आ जीव जप करे नहीं ते क्षणने विषे तेनो पतिव्रताधर्म सघळो छुटी जाय अने आसुरावेश थई

जाय तेथी करीने श्री गुसांइजीए कहुंछे जे श्रीकृष्णनाम सदा जपवुं माटे पाछुं पण आगळ कहेलुंछे के आनंद परमानंद वैकुंठस्य निश्चितं तेनो भाव कहेलो छे, जे आनंद एवुं ज्यारे आ जीव श्रीकृष्णनाम नो उच्चार करे त्यारे तेना सर्वांग एटले आखा शरीरने विषे आनंद उपजे. त्हां श्रीठाकुरजीनो संयोगात्मक जे स्वरूप छे तेनो आ जीवने अनुभव थाय, ए उपरांत बीजो आनंद कंई नथीज. तेथी श्रीकृष्ण जे श्रीपूर्ण पुरुषोत्तम छे तेना साक्षात दर्शन थाय अने सघळी लीलानो अनुभव जे छे ते आ नाम लीधाथी थायछे, तेमा कंई संदेह धारवो नहीं वास्ते श्री गुसाईजीए कहेलुंछे जे वैकुंठ तस्य निश्चितं ॥ एनो

भाव ए छे जे जीव श्री माहा प्रभुजीनें शर-
ण आव्योछो ते शरण आवीने जे आ जीव
सदा सर्वदा अहर्निस श्रीकृष्णनामनो उ-
च्यार करेछे, तेने श्रीठाकुरजी पोतीका रम-
ण स्थळ मांजे व्रजदेशछे. श्रीयमुनाजी श्री
गिरिराज श्रीवृंदावन श्रीगोकुळ आदि रम-
णस्थळ छे. जेने विषे आ जीवनी स्थिती
थाय त्हा आ जीव वास करे एटले वृज
देशमां स्थिती थईने सदा सर्वदा अहर्निस
श्रीठाकुरजीनी अनेक लीलाना दर्शन करी
ने अनुभव थाय. एवी कृपा श्री आचार्य-
जी महाप्रभुजीए आ जीव पर करीछे,
तेथी वैकुंठ संबंधी जे पदार्थ छे ते श्रीगो-
कुळ श्रीयुमुनाजी श्रीवृंद्रावन श्रीगिरिराज
तेनी समीप (पासे) तेने वास थाय. तेना

कशोए संदेह नहीं, तेथी श्रीगुंसाईजीए आपे कहेलुंछे के वैकुंठ तस्य निश्चितः तेथी आ कृष्ण नाम एवो पदार्थ छे ते अष्टप्रहर सदा सर्वदा भाव करीने श्रीकृष्णनामनो उच्चार करवो. एक एक क्षण विषे श्री कृष्ण नाम अहर्निस आवस्यक जपकरवो. हवे कहेछे जे योंस्मरेत् सदा कृष्ण यमस्य करोतिकं. ए कहीने ए जणाव्युं जे जीव सदा सर्वदा श्रीकृष्णनामनुं सुमिरण करेछे तेने कालादिकनो भय थतो नथी, ते शाथी जे श्रीभगवान तो कालादिकने नियामक छे, तेथी जे जीव श्री महाप्रभुजीने शरणे आवी श्रीकृष्णनामनुं स्मरण करेछे तेने कालादिक पण दंड देवाने सामर्थ्य नथी. शाथी जे जीव श्रीकृष्णजीने घणोज प्या

रहेछे तेथी जीवना उपर श्रीकृष्णजीनी कृपाछे तें जीवने कालादिकनी कहां सामर्थ्य छे जे भय देखडावे. अथवा दंड दई तेथी रंचक पण काळनो भय नहीं उपजे, तेथी श्री गुंसाईजीए कहेलुंछे जे भस्मी भयचीतस्या सुमहिं यात्कीळनाशयाः तेनो भाव ए छे, जे श्रीकृष्ण नामनो जे कोई जप करे तेने महा पातिक ब्रह्महत्यादिक गौहत्या, बाळहत्या, स्त्रीहत्या, गोत्रहत्या, आत्महत्या, इत्यादिक नाना प्रकारना जे घणी रीतना पाप छे, ते बधाने निवर्तकरी भस्म करी नाखनारो श्रीकृष्ण नाम छे. ते एवो कोई पाप रहित नथी. ज्ञाथी जेम पापरूपी मोटो रुनो ढगलो छे तेने बाळी नाखवा वाळी जे अग्नि ते आगमी एक

चींगारी पेला रुना ढगला उपर जो पडे तो तत्काळ सघळा रुना ढगलाने क्षण मात्रमां बाळी नाखे रंचक पण रहेवा नहीं दे, तेवी रीते ब्रह्महत्यादिक जेवा मोटा मोटा पापछे, तथा मोटा नाना तथा नानाप्रकार ना दोष छे, एटला सुधी दोष दृष्टि करीने नानाप्रकारना पाप छे तथा वाणी करीने पाप छे तथा मनकरीने महापाप छे वास्ते एवा एवा अनेक पाप तेनो पार नथी. शाथी जे अनेक जन्म थयाछे ते केम जे कोई जन्मां भगवन भजन नहीं थयुं होय एक आ मनुष्य देहमां तेने भजन करवानो अधिकार छे तेमां पण जो असुरादिकना घरमां जो जन्म थाय तथा चंडालादिकना घरमां जन्म थाय त्यारे भगवत जवनो अधिकार क-

हांथी होय. पण जो उत्तम कुळमां जन्म होय अने तेमां जो सत्संग मळे तो श्री भगवाननुं भजन करे अने जो नीचसंग उत्तम कुळमां पण जन्म पाम्या पण पापादिकना आचरण करे ते कोईना परम भाग्यथी सत्संग मळे केम जे सत्संग तो घणो कठीण छे. तेथी अनेक दोष करीने दोषवंत थयोछे अने जेवो रुनी ढगलो होय तेवी दोष रुप जे रु तेनो मोटो पर्वत छे तेवा रुने जळाववा वाळो अग्नि छे, तेवीज रीते पाप रूप रुनो जे मोटो ढगलो छे तेने सळगावाने नाश करवाने अग्निरुप जे श्रीकृष्ण नाम छे एवी श्रीकृष्ण नाम रुपी जे अग्नि छे ते केवी छे? जे एक क्षण मात्रमां पाप रुप जे रुनो मोटो पर्वत छे तेने बाळीने

भस्मकरी नाखे एवुं जे श्री कृष्णनाम अग्नि रूप, पापरूप रुउने दहन करी नाखे तेथी जे कोई श्रीकृष्णनाम लेछे तेना सकळ पाप बळीने भस्म थई जायछे. एवो प्रताप श्रीकृष्ण नामनो छे, जे नाम लीधाथी रंचक पाप रही शकतो नथी बास्ते श्री गुंसाई जीए कहेलुंछे भस्मी तुं भवति तस्या सुमती पातक रासयः हवे श्री गुंसाईजी कहेछे जे एवी रीते स्मरण करता सदा मंत्र श्रीकृष्ण शरणंममः आ मंत्रनुं सदा स्मरण करवुं. आ मंत्रनो आश्रय छोडवो नहीं, वास्ते करीने श्रीगुंसाईजी कहेछे. अष्टाक्षर जपे नित्यं तत्तदष्टा यम संकयेत् ॥ तेनो भाव ए छे जे सदा सर्वदा सर्वकाळ विषे दुःख सुखमां सुवा बेसवामां धरमसंबंधी

काम करवामां बोहोळा वेपारमां अथवा अनेक काम करवामां मार्ग चालवामां, भय व्याप्तमां सदा श्रीकृष्णनामनुं स्मरण करता रहेवुं. श्रीकृष्ण शरणंममः आमंत्रनो आश्रय छोडवो नहीं, केमके आ मंत्र केवो छे जे सघळा भयथी छोडाबनारो छे, अथवा सघळा प्रतिबंधने दूर करवावाळो छे. परंतु नित्य प्रति क्षण क्षणने बिषे सबंदा मंत्रनो जप करेछे, एवो जे भगत तेनी सहायमां ए जो जम पण पोताना मनमां भय आणीने पाछी फरी जायछे. एवुं कहीने आ जणाव्युं जे सघळा कोई काळना मुखमां छे वास्ते काळ कोईथी जीती शकायो नथी तेथी एवो अष्टाक्षरनो प्रताप छे, तेथी करीने श्री गुसाइजी ए कहेलुंछे,

के ॥ ततदृष्टायमसंकयेत् ॥ हवे श्री गुंसाईजी कहेछे जे श्री मंत्रार्थ प्रकारयु ते जीवानांकार्थसाधनं ॥ जीवानां हित कार्यार्थ श्री गुरू विठ्ठलेश्वर ॥ एनो भाव हवे कहेछे जे संयुक्त जे मंत्रछे तेनो प्रकास शावास्ते प्रगट कीधो छे. केम के जे मोटा मोटा ऋषीश्वर मुनीश्वर एवा मंत्रनो अर्थ प्रगट नथी कीधो अने श्री गुंसाईजीए आपे अलौकिक मंत्रनो अर्थ प्रगट करयो ते कंई श्री गुंसाईजी ए कोईनी अपेक्षाने अर्थे तो करयो नथी, पण अलौकिक मंत्रनें अर्थे करयो होशे. आ रीतथी कोई पूर्व पक्ष करे त्हां हवे कहेछे जे श्री गुंसाईजी आप केवा छे जे परम निसकाम छे निरपेक्ष छे, पूर्णा नंद छे, पूर्ण कामछे, सर्व

गुण संपन्न छे साक्षात पूर्ण पुरुषोतम छे, अने सघळा अवतारना अवतार छे. साक्षात मनमथना मनमथ कोटि कंदर्प लाबण्य खट गुण ईश्वर्य संपन्न रसिक सिरोमणी छे. भक्त मनोरथ पूर करे छे एवा श्री गुंसाईजी आपछे तेमने वीजा कोईनी अपेक्षा नथी केम जे आपज कोटि ब्रह्मांडना कर्त्ता छे, वीजुं कोटि ब्रह्मांडमां जेनी विभूति व्याप्त थई रहीछे प्राणी मात्रना अंतर जामीछे, जेनी स्तुति ब्रह्मादिक, शिवादिक, इंद्रादिक सघळा करेछे एवा श्री गुंसाईजीने शी वातनी अपेक्षा होय, वास्ते श्री गुंसाईजी तो आप परम दयाळछे करुणा निधानछे, तेथी आपे विचार कीधुंछे, जे आ मंत्र विषे जीवनी प्रतीति केवी-

सेते उत्पन्न थाय तेथी ज्यारे आ मंत्रनो भाव सहित अहर्निस स्मरण जप करे त्यारे आ जीवनो सकळ मनोरथ पूर्ण थाय तेथी करी निजभक्त जे दैवीजीव छे तेना हित करवाने लीधे आ मंत्रनो अर्थ प्रगट कीधो छे तेथी श्री गुंसाईजी कहे छे जो ॥ जीवन कार्य साधनं तथापि श्री गुंसाईजी आप कहे जो जीवा नांम हित कार्यार्थ श्री गुरु विट्ठलेश्वर एनो भाव एवोछे जे केवळ जीवना उपर हित करवाने लीधे, तथा जीवने घणो श्रम करवो न पडे, अने तत्काळ परम फळनी प्राप्ति थाय एम विचारीने आ अष्टाक्षरनो मंत्र प्रगट कीधोछे. माटे आप गुरु रूप प्रगट थईने जीवने शरण लेईने जीवनो उद्धार करेछे. ते शाथी

जे गुरुनो तो ए लक्षण छे, जे आपना सेवकने जलदीथी भगवद प्राप्ति थाय अने संसार समुद्रने तरीने आवा गमनथी छूटे. एवो उपदेश करे, यद्यपि शिष्य गमे तेवो होय. परंतु शिस्यनो अपराध आपना मनमां न लावे, अने शिस्यनो उद्धारज विचारे, तेथी श्री गुंसाईजी आप गुरु थईने जीवनो कृतार्थ थवानो विचार करीने आ मंत्रनो अर्थ कीधोछे, तेथी पोतानी प्रभुतानी सांमे जोईने जीवना उपर अनुग्रह करीने आ मंत्रनो अर्थ प्रगट कीधो तेथी आ मंत्रने जप करवामां कोई वातनो संशय मनमां लाववो नहीं. भाव सहित नित प्रति जप करवो. हवे श्री गुंसाईजी आप कहेछे श्री मुखथी जे कथ्यंते संमक श्री अष्टाक्षरवत

एनो भाव आ छे जे श्री गोवर्द्धनधिरन-
धीर आप कृपाकरीने अष्टाक्षर मंत्र पोता-
ना श्री मुखथी कथ्यंते नाम कहेता थया.
श्री स्वामिनीजी पति शाथी जे श्री स्वा-
मिनीजी द्वारा अनेक भक्तना मनोरथ
पूर्ण करवा छे, वास्ते भक्तनो मनोरथ
पूर्ण क्यारे थाय, जे ज्यारे पुष्टि मार्गमां
शरण आवे त्यारे भक्तनो मनोरथ सिद्धि
थाय, तथा लीला रसना अधिपति तथा
दान रसना विहार रसना भोक्ता तथा क-
र्ता अने दाता एवा तो श्री स्वामिनी जी
छे. ऐवा श्री स्वामिनीजी जेना उपर कृपा
करे तेने थाय, तथा अनुभव थाय जेना उपर
श्री स्वामिनीजीनी कृपा न होय तेने तो
कोई रसनी प्राप्ति नहीं थाय. अने अनुभव

पण नहीं होय तेथी श्री गोवर्द्धननाथजी ए आपे विचार्युं जे मारे तो भक्तनो मनोरथ पुर्ण. करवो छे एवा भक्तनो मनोरथ तो श्री स्वामिनीजीनी कृपा कटाक्ष विना सिद्ध थाय नहीं, तेथी शुं उपाय करीयें, त्यारे आपे आ अष्टाक्षर मंत्र श्री स्वामिनी जीने कह्यो अने आज्ञा पण दीधी, जे आ पुष्टि मार्गना अधिपति आप छो, तेथी जे रमण सामग्री अधिक करवाने लीधे, सदा जीवात्मक सृष्टि पण तमारे प्रगट करवी, अने तेने शरण मंत्र पण तमारे देवो, केम जे तमे आपेलो जे मंत्ररूप फळ ते सघलाने फलित थाशे, केम जे लीलाना अधिपति तो आपछो, तेथी जेने कृपा करीने जेनो आ दासभाव सिद्ध करशो तेने आ

सेवा संबंधी वस्तुनी सिद्धि थशे, तथा आ मर्यादा पण छे जे जहां तहां गुरुनी दीक्षा नहीं थाय तहां लगी तेने भजननुं फळ सिद्धि थाय नहीं, तेथी आ परम रस रूपी जे मार्ग छे तेना उपदेष्टा गुरु आपछो अने अधिपति पण आपछो, तथा भजनीय पण आपछो. तेथी लीला संबंधी सृष्टिने शरण लेशो शरण मंत्रनो उपदेश करशो त्यारे सघळी लीला सृष्टिनो तेने अधिकार थशे अने सघळी लीलासृष्ट आपने शरण आवशे, अने तमारुं भजन सेवन करशे, त्यारे तमो तेने कृपाकटाक्ष भरीने जोशो, त्यारे तमारी कृपाकटाक्षना अवलोकनथी तेनी अयोग्यता सघळी जाशे त्यारे तमारा कहेवा परथी तमारा संबंधथी तेने सेवानो

अंगीकार करशुं. त्यारे तेना सकल मनोरथ सिद्धि थशे, आरीते श्री गोवर्धननाथजी श्रीमुखथी श्रीस्वामिनीजी पतिने आ अष्टाक्षर मंत्र कहेता थया, त्यारे श्री स्वामिनीजी पोतानी कृपाकटाक्ष करी आपनो सर्व धर्म करी सर्व सामर्थ करी सर्वांग सुंदर परम रसात्मक चतुर शिरोमणी आप समान श्री चंद्रावळीजीने प्रगट कीधा. त्यारे श्री चंद्रावळीजी आप पोताना बेउ श्री हस्त जोडीने उभा थया, अने विनंती करवा लाग्या जे महाराजाधिराज हुं आपने शरणछुं. अने आपे जे कारणने लीधे मनें प्रगट कीधीछे तेथी सेवानी आज्ञादो, तथा कृपा कटाक्ष करी भरीने मा री सामा जुवो, तथा मने पोतानी करी

जाणो, हुंतो आपनो आज्ञा कारीछुं, आ रीते घणीज विनंती कीधी, त्यारे श्री स्वामिनीजी पोते कृपा करीने श्रीकृष्णशरणं-ममः आ अष्टाक्षर मंत्रनुं दान दीधुं त्यारे श्री चंद्रावळीजीए विनंती कीधी जे शुं इच्छाछे; त्यारे श्री स्वामीनीजी ए आज्ञा दीधी जे परम रसिक परम सुंदर निर्विकार एवी सृष्टि प्रगट करो, तेथी लीला सांमग्री सघळी प्रगट करी अने ते लीला सृष्टिनो उपदेश आ मंत्रना करो त्यारे सेवा योगी सृष्टि थशे, ए रीते सघळाने अंगीकार नी आज्ञा दीधी, ते पछी श्री चंद्रावळीजीए आ लीलासृष्टिनो विस्तार कीधो, नाना प्रकारना भाव सहित सघळाने शरणमंत्रनो उपदेश करता थया, वास्ते करी श्रीमुखनुं

वचन छे जे कथ्यंते सम्यक् तेवाज श्री स्वामिनीजी रूप साक्षात् श्री महाप्रभुजी छे. तोके श्री महाप्रभुजी केवाछे? जे उपरतो ब्राह्मणवेष धर्यो छे ते केम, जे आसुरी जीवने मोह उपजाववाने लीधे ब्राह्मण वेष धारण कीधो छे, उपर तो ब्राह्मण वेष छे अने अंदर तो साक्षात् मन्मथ मन्मथ कोटिकंदर्प लावण्य साक्षात् श्री गोवर्धन धीर आपछे, ते केम जे ज्यारे पृथ्वी उपर भाररूप राक्षसादिक घणा कंसादिक, शिशुपाळादिक, जरासंधादिक, जेवा पेदा थया, त्यारे पृथ्वी घणी व्याकुळ थई तथा देवता सघळा व्याकुळ थया त्यारे श्रीकृष्ण चंद्र पूर्ण पुरुषोत्तम प्रगट थयुं. ने सघळानो संहार कीधो, अने देवतानी रक्षा

कीधी, तथा भक्तना भांति भांतिना मनोरथ पूर्ण कीधा, तेमज आ कळिकाळने विषे पृथ्वीना उपर मायावादी रूप, ब्रह्मराक्षसादि सृष्टि घणी विस्तार थई त्यारे आ ब्रह्म राक्षस जे मायावादी तेने भगवद्धर्मने उछिन्न करी नांख्यो, अने वेद मार्गने विपरीत करवा लाग्या, अने भगवत् स्वरूपनी सेवा छोडावीने महादेव भवानी गणेश तेनी पूजा चलावी तथा भगवांनुं भजन छोडावीने महादेव भवानी गणेशनुं भजन महात्म प्रगट कीधो. अने केशर चंदन कुंमकुमनुं तिलक छोडावीने भस्मनुं तिलक प्रगट कीधुं तथा तुळसीनी माळा छोडावीने रुद्राक्षनी माळा प्रगट कीधी, केमके रुद्राक्षनी माळा केवीछे जे पद्मपुरांण

ने विषे कह्युंछे जे जेना हस्त कुंठमां रुद्राक्ष होय अथवा धारण कीधी होय, तेनुं स्वरूप केवुंछे जे चंडाळ समान तेनुं स्वरूप छे, जो मृतक समान जेने रुद्राक्ष धारण होय तेनो स्पर्श करे तो सचैल "स्वचीत" स्नान करवुं पडे; एवी अशुद्ध विरुद्ध रुद्राक्षनी माळा प्रगट कीधी. अने भगवद् मंत्रने छोडावीने भूत पिशाच चंडाळ, डाकण, कामण, तोमण, मोहन, मारण, उच्चाटण करवाने मंत्र प्रगट कीधा. तथा भगवत् मंत्रने दूषण करी भगवत् धर्म छुडावता थया, त्यारे पृथ्वीथी एवो भार सह्यो नगयो, तथा भगवत् भक्तनो क्लेश सह्यो नगयो, त्यारे व्याकुळ थईने गौरूप धारण करी श्री भगवान् पास ब्रह्मासहित पुकार करवा

लाग्या, त्यारें श्री भगवानें श्री वल्लभाचार्यजीनुं रूप धरयुं, ब्राह्मण वेषधारण करीने सर्व मायावादी ब्राह्मणनो राक्षसनो वेद रूप शास्त्र वाण करीने विदारण कीधुं, अने भगवत् धर्मनुं स्थापन कीधुं, तुलसीनी माळा, कुंमकुंम केशरनुं तिलक धारण कराव्युं. मायावादीनो विध्वंस करी भक्तनी रक्षा कीधी माटे स्वयं श्रीपूर्ण पुरुषोत्तम आप श्रीआचार्यजी महा प्रभुजी छे, अने भगवाननुं स्वरूप करी साक्षात् श्रीस्वामिनीजी रूपछे तेथी करी श्रीआचार्यजी महा प्रभुजी पुष्टि मार्गना अधिपतिछे, अने पुष्टि रसनुं दान कर्त्ता पण आपछे तेथी श्रीगोकुलनाथजीए विचार्युं के जे पुष्टि लीला संबंधी जे दैवी जीवछे, तेओ तो मायावा-

दीनो संघदोष करीने आसुरी वेष थई रह्याछे, तेथी ए ज्यारे शुद्ध थाय त्यारे एथी सेवासंबंधी काम करयुं जाय, ए रीते आपे विचारीने श्रीगोर्द्धन नाथजी आपे श्रीमुखथी आ अष्टाक्षर मंत्र श्रीआचार्यजी महा प्रभुजीनी आगळ कह्यो ते शाथी जे जहां सुधी जीवनो अन्याश्रय न छूटे तहां सुधी भगवत् आवेश न होय एवास्ते शरण मंत्रनो उपदेश करावीने आपनी शरण सिद्धि कीधी, तेथी श्री गुंसाईजी श्रीमुखथी कहेछे के ॥ कथ्यंते संम्यक् ॥ अने जेम लीला सृष्टिमां श्री चंद्रावळीजी छे उपदेष्टा श्री स्वामिनीजीनी आज्ञाथी श्री गुंसाईजी उपदेष्टा गुरुछे ने श्री आचार्यजी महा प्रभुजी आ पुष्टि मार्गना अधिपतिछे वास्ते श्री गुंसाईजी

आप कहेछे जे श्री मुखथी ॥ कथ्यंते सं-
म्यक् अष्टाक्षर तत्वत्तचि वर्ण हृदये थस्ये.
श्री वल्लभ वल्लभो भवेत् ॥ हवेश्री गुंसाई-
जी आप कहेछे जे ॥ श्री सौभाग्यप्राप्ति-
श्व ॥ एनो भाव कहेछे जे आ अष्टाक्षर
मंत्रमां जे साकारछे ते मुख्यछे ॥ तेथी
श्री स्वामिनीजीने सौभाग्यनी प्राप्ति थई
ते कई रीतथी, जे श्री स्वामिनीजीना पति-
श्री ठाकुरजी आपछे अने अति अविचल
सौभाग्यछे तथा कहीये श्री वृजना भक्त
तेने सौभाग्यछे तेथी कोई श्री आचार्यजी
महा प्रभुजीनी शरण आवीने आश्रीत स-
हित अष्टाक्षर मंत्रनो जप अहर्निस करे तेने
एवी सौसांगि प्राप्ति, थाय अने श्रीठाकुरजी
तेना पति थाय एवुं फळ थाय, अथवा ध-

नवान् थाय अथवा राज्यवान् थाय ॥ यांते कहेजो धनवान राज वल्लभः ॥ हवे आ अष्टाक्षरमां कृपाशब्दछे तेनुं कारण एछे जे जेटलुं पापछे ते त्रिविध तापछे तेथी त्रयताप इत्यादि सघळाने दूर करे तथा सशब्द करीने नानाप्रकारना जन्म भोगवेछे तेमटे, अने ओंकार शब्द करीने अलौकिक श्री महा प्रभुजीना स्वरूपनुं तथा श्रीमहाप्रभुजीनी लीलानुं ज्ञान थाय, अने नकार शब्द करी सदा श्रीकृष्णने विषे दृढ भक्ति थाय तथा प्रकार शब्द करीने प्रभुने विषे प्रीति थाय, तथा वृजभकतने विषे प्रीति थाय तथा बीजा मकार शब्द करीने श्रीहरीनो सा पूज्य थाय सदा श्री भगवानूनी समीप रहे, तथा बीजी योनिमां जन्म

नहीं थाय, आ प्रकारे आठ अक्षर स्वरूपात्मकछे, हवे श्रीगुंसाईजी कहे छे जो कोई अष्टाक्षर मंत्रनो जप करे तेने संसारने विषे वैराग्य उत्पन्न थाय, अने श्री ठाकुरजीने विषे भक्तिभाव प्राप्ति थाय, तथा सौभाग्य अचल थाय, तथा अलौकिक भक्तिनी प्राप्ति थाय, तथा सर्व रोगादिक ज्वर इत्यादि सघळानो नाश थाय, अनेक प्रकारना प्रतिबंधनो नाश थाय, तथा अष्टसिद्धि नवनिधि तेना गृह विषे बास करे. तथा सदा आनंदनी प्राप्ति थाय, तथा श्री ठाकुरजीनी निकट बास थाय, तथा श्री ठाकुरजी एने अतिप्रिय लागे, बळी अष्टाक्षरनो जे सदा सर्वदा जप करे तेना सघळा दुःखोनुं नाश थाय, तथा तेने कोई भूत, प्रेत,

पिशाच, डांकण, चुडेल कोईनो डर भय प्राप्ति न थाय, तथा मारगमां चालतां तेने वाघनो भय प्राप्ति न थाय, अथवा सर्व चोरनो भय न थाय अथवा कोई संकट तेने न थाय, अने शत्रु होय तेनो मित्र थई जाय, बीजुं कोईनी नजर नलागे तथा सर्पादिक कोई डसे नहीं, तथा कोई तेने घात मूठ न करे, अने सर्वे मळीन क्रिया छुटी जाय, तथा नाना प्रकारना भाग्य दोषथी तेने पीडा न थाय, तथा ग्रहनी पीडा तेने थाय नहीं; तथा आनंदरूप श्री ठाकुरजी तेना हृदयविषे विराजमान थईने रहे, तथा तेने कोई दुःख थाय नहीं, तथा सर्वत्र जहां जाय तहां तेने सुखनी प्राप्ति थाय, तथा जे कोई आ अष्टाक्षर मंत्रनो रात्र दिवस सदा स-

वंदा जप करे तो तेने गुरूना दर्शन थाय, तथा श्री ठाकुरजीना दर्शन थाय. तथा तेने लौकिक वाधी नकरे तथा भगवत् भाव दिन दिन प्रति वर्द्धमान थाय इत्यादि फळ आ मंत्रना जपथी थाय, तथा आ मंत्र केवो छे? जे जेटला मंत्र वेद शास्त्रमां, सृष्टिमां, पुरानमां, नारद पंच रात्रमां इत्यादिक जेटला मंत्र छे ते सगळानो राजा आ मंत्र छे तथा सघळा मंत्रमां उत्तमथी उत्तम आ अष्टाक्षर मंत्र छे तेथी श्री गुसांईजी कहे छे जे श्रद्धापूर्वक, भक्तिपूर्वक, भाव पूर्वक, महात्म्यपूर्वक, स्नेह पुर्वक, विश्वास पूर्वक, आश्रय पूर्वक, दीनतापूर्वक, नेमपूर्वक, आ अष्टाक्षर मंत्रनो जप करवो; ध्यान करवुं. त्यारे तेना घरमां सदा

अष्टसिद्धि नवनिधि सर्वदा वास करे. श्री ठाकूरजीना हृदयनुं तात्पर्य जाने आ वास्तविक सत छे, तेमां संदेह नहीं, अथवा आ मंत्रनो भाव प्रकाश कीधो छे, अथवा कदाचित कोई कहे जे कृष्णनामनुं महात्म्य तमोज कहो छो, के कोई बीजी ठेकाणे पण कह्यो छे, तहां कहे छे जे वेदमां पण कह्यो छे, अथवा शास्त्रमां पण कह्यो छे अने पुराणमां पण कह्यो छे अने श्री भगवाने पोते पण श्रीमुखथी कह्यो छे, तथा श्रीआचार्यजी महा प्रभुजीए पण आपे कह्यो छे, अने हमो पण कहीए छीए. जे श्रीकृष्णशरणंममम: आ अष्टाक्षर मंत्र अति श्रद्धापूर्वक अहर्निस कहो, आ मंत्रथी सकळ मनोरथनी सिद्धि थायछे तेमां संदेहमां

राखजो, आ हमो निश्चय सिद्धांत प्रगट करीए छीए. इतिश्री विठ्ठलेश्वर विरचिते अष्टाक्षर निरूपण तेनी भाषामां टीका करी छे ते संपूर्ण.

॥ अथ श्री आश्रयके पद लिख्यते ॥

॥ प्रथम श्री गुसांईजीके पद ॥

॥ राग केदारो ॥

उत्तम कुल अवतार कहाजो ॥ श्रीबल्लभराज-कुमार न जान्यो ॥ चरचा न कीनी वर वल्लभकी ॥ रच्यो हे पाखंड कियो बहु बान्यो ॥ १ ॥ रसिक कथा सुनी नहीं श्रवनन ॥ विषय रस रह्यो लपटान्यो ॥ सोच मिट्यो नहि उर अंतरको ॥ समजी समजी लागो पिछतानो ॥ २ ॥ गिरि गोवर्द्धन वृज वृंदावन ॥

कबहुन नेण निरखी सिरानो ॥ कृष्ण दास प्रभुकी गुण महिमा ॥ अगम निगम सुजा-त न वखाण्यो ॥ ३ ॥ ॥ राग केदारो ॥ ॥ श्री विठ्ठलनाथ बसत जिय जाके ॥ ता-की रीत प्रीत छब न्यारी ॥ प्रफुल्लित वदन कांति करुणामय ॥ नेणनमें झळके गि-रधारी ॥ १ ॥ उग्र स्वभाव परम परमारथ ॥ स्वारथ लेश नहीं संसारी ॥ आनंद रूप करत इक छिन्नमें ॥ हरि जूकी कथा के हित विस्तारी ॥ २ ॥ मन क्रम वचन वाहीको संग कीजै ॥ पैयत वृज युवति सुखकारी ॥ कृष्णदास प्रभु रसिक मुकटमणि ॥ गुण निधान श्री गोवर्द्धन धारी ॥ ३ ॥ ॥ ॥ ॥ राग केदारो ॥ श्री विठ्ठल जुके चरण कमलपर ॥ सदा रहे मन मेरारी ॥ शीतळ

सुभग सकल सुखदायक ॥ भवसागरको फेरारी ॥ १ ॥ रसना रटत होत निस वासर ॥ प्रभु पान जस नेरोरी ॥ सगुण दास इतनी मांगतहो ॥ जन्म जन्मको चेरोरी ॥ २ ॥ श्री विठ्ठलनाथ कमलदळ लोचन ॥ माई मेरो मन अटक्योरी ॥ जबतें दृष्ट परीआ मुखसे ॥ तबतें अनतन भटक्योरी ॥ ३ ॥ लोक लाज कूळकी मरजादा ॥ सबही लेमें पटकीरी ॥ छित स्वामी गिरिधरन श्री विठ्ठल ॥ चित्त नेणनमें अटक्योरी ॥ ४ ॥

॥ राग केदारो ॥ परम कृपाल श्रीवल्लभ नंदन ॥ करत कृपा निज हाथ दे माथे ॥ जे जन शरण आई अनुसरहि ॥ तेहे सोंपत श्री गोवर्द्धन नाथे ॥ १ ॥ परम उदार चतुर चिंतामणि ॥ राखत भवद्वाराके साथे ॥

भजि कृष्णदास काज सबसरहि ॥ जो जाणे श्री विट्ठल नाथे ॥ २ ॥ ॥ ॥ ॥ राग बिहागडो ॥ श्री विट्ठल नाथ उपासी हमतो श्रीविट्ठल नाथ उपासी ॥ सदा सेवुं श्रीवल्लभ नंदन काहाकरूं जाय कासी ॥ १ ॥ इनको छांडि औरको धावें ॥ सो कहीये असुरासी ॥ छित स्वामी गीरिधरनं श्री विट्ठल ॥ वाणी निगम प्रकासी ॥ २ ॥ ॥ राग बिहागडो ॥ वनमें श्रीविट्ठल नाथ बिराजे ॥ जीनको परम मनोहर श्रीमुख देखतही अघ भाजे ॥ १ ॥ जिनके पद प्रतापतें निरभे सेवक जन सब गाजे ॥ छित स्वामी गिरिधरन श्रीविट्ठल प्रगट भकत हित काजे ॥ २ ॥ ॥ राग यमन ॥ जे श्रीवल्लभ नंदन गाउ ॥ श्री गिरिधरन सुख

दाता गोविंदको सिरनाउं ॥ १ ॥ बाळकृष्ण बाळक संग बहरत ॥ गोकुळनाथ लडाउं ॥ श्री रघुनाथ प्रताप विमल जसु ॥ श्रवण न सदा सुनाउं ॥ २ ॥ यदुकुल में यदुनाथ विराजत ॥ लीला पार न पाउं ॥ कृष्णदास कों करो कृपा ॥ घनश्याम चरण लपटाउं ॥ ॥ ३ ॥ ॥ राग बिहाग ॥ मथुरामांजी रहीये पलक एक ॥ टेक ॥ जन्मों जन्म के पाप कटत है ॥ श्रीरामकृष्ण गुण गाईए ॥ १ ॥ महा प्रसाद जल यमुना जीको ॥ प्रेम प्रित सों लइए ॥ सूरदास वैकुंठ मधुपुरी ॥ श्रीकृष्ण कृपातें पइए ॥ २ ॥ श्रीगोवर्द्धन की रहीए तरेटी ॥ नित प्रति मदन गोपाळ लालके ॥ चरण कमल चितलईए ॥ १ ॥ तिन पुलकित व्रजरजमें लोटत गोविंद कुंडमे

नहैये रसिक प्रीतमहित चितकी बतीयां ॥
श्री गिरधारी जीसुं कहीये ॥ २ ॥ ॥
॥ राग बिहाग ॥ भजो भैया गोविंद कृष्ण
हरी ॥ यहकाया कागद की पुतंलो छिनमें
जात जरी ॥ १ ॥ देहधरी गोविंद न गायो ॥
गुरू सेवा न करी ॥ भूखे भोजन न दीनो ॥
तीर्थागन भरी ॥ २ ॥ माल दाम कोडी नहीं
लागत ॥ छुटत नहीं गठरी ॥ जा मुख
सुर प्रभु नहीं उचरयो ॥ तामुख धूर परी ॥ ३ ॥
॥ राग बिहाग ॥ हरि रसताही ते जाय
लहियें ॥ स्वाद विषाद इतरता ॥ इतरो
दंडजो सहीये ॥ १ ॥ आए नहीं आनंद
गये नहीं सोच ॥ ऐसे मार्ग वहीये ॥ कोमळ
वचन ॥ सबनसों दीनता सदा फुल्लित रहीयें
॥ २ ॥ जाके मनमें ऐसी आवे ॥ ताके भाग

को काहा कहीये ॥ अष्ट सिद्ध नवनिधि सुर श्यामकों ॥ जो मांगेसों दइये ॥ ३ ॥ ॥ ॥ राग कान्हरो ॥ हों सेवों गिरिधरन छबीलो श्रीमोहन लाल रंगीलो इयाम ॥ और अनेक अवतार लीये प्रभु ॥ तासों मेरे नही कछु काम ॥ १ ॥ पिता नंद जाकी जननी जसोदा ॥ बडे भैया जाके बळराम ॥ जाकी त्रीया बृखुभान नंदनी ॥ श्रीराधा प्यारी वाको नाम ॥ २ ॥ मथुरा नगरी गिरि गोवर्द्धन ॥ बृज वृंदावन गोकुळ गाम ॥ मानेक चंद प्रभु सब सुखदायक ॥ नित उठि दर्शन बृजमें ठाम ॥ ३ ॥ ॥ राग बिहाग ॥ बृज वस बोल सबनके सहीये ॥ लाख बुरी भली जो कहे तो ॥ नंद नंदन रस लइएं ॥ १ ॥ अपनें गुनमते कीवाते काहुसो न

कहीये ॥ परमानंद दासको ठाकुर ॥ आ-
नंद हृदयमें रहीये ॥ २ ॥ ॥ ॥
॥ राग ॥ बिहागडो ॥ श्रीविठ्ठलनाथ ना-
म रस अमृत ॥ पान सदा तुं करी रे रसना ॥
जो तुं अपनो भलो चाहे तो ॥ येही मार्ग
अनुसर रे रसना ॥ १ ॥या रसिके प्रति बा-
धक जे ते ॥ तिनसों तुं अति डर रे रस-
ना ॥ हरिको विमळ जस गात निरंतर ॥
जात विघ्न सब डर रे रसना ॥ २ ॥ बारंवार
कहितहु तो सुं यही नेम जीय धररे रसना ॥
चत्रभुज प्रभु गिरिधर नलालको, आनंद
उरमें भररे रसना ॥ ३ ॥ ॥ ॥

समाप्त.

दोहोरो.

—*❋*—

अष्टाक्षर श्रीकृष्णना,
जपो वै[illegible] अहर नीश
प्रेमे नमी छबीलदास क
पामशो श्रीविठ्ठल ईश.

कृष्ण कृष्ण कहेते रोहो,
जबलग घटमें प्राण;
कदी कदी दीनदयाळके,
शब्द पडेंगे कान.